By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
August 18, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 16

Class BA Part I (H) Paper II

अंतर्क्रियावाद का सिद्धान्त

देकार्त अपने दर्शन में ईश्वर के अतिरिक्त और चित् और अचित् दो और तत्व मानते हैं। चित् तत्व मन का सूचक है और अचित् तत्व शरीर का सूचक है। मन का गुण विचार है तथा शरीर का गुण विस्तार है। इस प्रकार चित् और अचित् के विचार तथा विस्तार दी गुण हुए।

मन तथा शरीर दोनों विरोधी तत्व है। मन सक्रिय है तथा शरीर निष्क्रिय। मन का विस्तार नहीं हो सकता तथा शरीर में विचार नहीं हो सकता। जड़ में चेतना का नितांत अभाव है तथा चेतना में जड़ता का कोई स्थान नहीं। इस प्रकार दोनों दो भिन्न तत्व है। यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि इन दो भिन्न तत्वों में किसी प्रकार का संबंध है या नहीं? यदि दोनों तत्व विरोधी हैं तो इनमें पारस्परिक संबंध नहीं हो सकता और यदि संबंध है, तो किस प्रकार से? इस प्रश्न का उत्तर देकार्त अपने मन शरीर संबंधित सिद्धांत में देते हैं।

देकार्त का मन शरीर संबंधित सिद्धान्त अंतर्क्रियावाद का दर्शन कहलाता है। चेतना तथा जड़ दोनों विरोधी है, अतः इन में कोई पारस्परिक संबंध संभव नहीं है। परंतु हम स्पष्ट रूप से इनमें दैनिक संबंधों का अनुभव करते हैं। हम मन तथा शरीर में अंतर क्रिया का प्रतिदिन अनुभव करते हैं। हमारे शरीर को भूख लगती है, प्यास लगती है और मन खिन्न हो जाता है। पुनः मन में दुख सुख का भाव उत्पन्न होता है और शरीर खिन्न तथा अप्रसन्न हो जाता है। हमारा मन प्रसन्न रहता है तो चेहरा भी खिला हुआ रहता है। मन में दुख होने पर या निराश होने पर शरीर भी क्षीण होने लगता है भूख। प्यास शरीर में उत्पन्न होती है परंतु संतोष का अनुभव भोजन के

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
August 18, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 16

उपरांत मन को होता है। यह संभव कैसे हैं? तात्पर्य है कि यदि मन और शरीर दोनों दो है तो यह अंतर्क्रिया कैसे होती है? डेकार्ट के दर्शन में यहां स्पष्ट रूप से असंगती हो रही है। इसका उत्तर देकार्त ने अपने 'चिदचित् संयोगवाद' सिद्धांत के द्वारा दिया है यही देकार्त का अंतर्क्रियावाद या क्रिया-प्रतिक्रिया वाद (इंटरेक्शनिस्म) कहलाता है।

इस सिद्धांत के अनुसार आत्मा और शरीर में पीनियल ग्रंथि के द्वारा क्रिया प्रतिक्रिया होती है। शरीर की क्रिया से आत्मा में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप आत्मा को बाहर के जगत का ज्ञान होता है। इसी प्रकार आत्मा की क्रिया से शरीर में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, जिसके फलस्वरूप शरीर में विचार के अनुकूल व्यवहार होने लगता है। इसकी प्रतिक्रिया इस प्रकार होती है:-

क. बाह्य जगत से संवेदनाएं उत्पन्न होती है। इन संवेदनाओं को इंद्रियां ग्रहण करती हैं। इस प्रकार बाह्य-जगत विषयक संवेदनाएं उद्दीपक का काम करती हैं जिसका प्रभाव इंद्रियों पर पड़ता है।

ख. इन प्रभावों के फलस्वरूप जैविक शक्ति (Animal spirit) उद्दीप्त होती है।

ग. जैविक शक्ति के उद्दीप्त होने पर इसके माध्यम से प्रभाव पुरीतत अर्थात पीनियल ग्लैंड तक पहुंच जाते हैं।

घ. पीनियल ग्लैंड से जैविक शक्ति स्नायु मंडल में विचरण करती हुई मांसपेशियों तक पहुंचती है। इसके बाद शारीरिक व्यापार प्रारंभ होने लगता है।

इस प्रकार जब मानसिक विचारों के अनुकूल शारीरिक कार्य होता है तो पूरीतत् नारी से जैविक शक्ति नायु मंडलों द्वारा शरीर में क्रिया उत्पन्न होती है।

संक्षेप में पीनियल ग्लैंड ही मन और शरीर की मिलन सैया है। स्वयं देकार्ट्स का कहना है कि मानव शरीर में पीनियल ग्लैंड नामक एक विशेष ग्रंथि है। यह ग्रंथि मन

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
August 18, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 16

और शरीर का मिलन बिंदु है। इसी ग्रंथि के द्वारा मन में होने वाली क्रिया प्रतिक्रिया का प्रभाव शरीर पर पड़ता है तथा शरीर की क्रिया प्रतिक्रिया का प्रभाव मन पर पड़ता है।

इसे एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते हैं। "अश्व तथा अश्वारोही दोनों भिन्न है परंतु उनमें पारस्परिक क्रिया संभव है। जिस प्रकार अश्वारोही अश्व की गति में वृद्धि करता है उसी प्रकार मन भी शारीरिक क्रियाओं को उत्तेजित करता है।" परंतु उपरोक्त उदाहरण केवल उपमा है व्याख्या नहीं। अश्व तथा अश्वारोही दोनों में उद्देश्य की समानता है। दोनों की प्रकृति प्रायः समान गति-मूलक एवं चेतन कही जा सकती है। परंतु मन और शरीर दोनों नितांत भिन्न है। जड़ और चेतन, विचार और विस्तार में किसी प्रकार की समानता नहीं है। परंतु दोनों में अंतर्क्रिया का अनुभव हमें प्रतिदिन होता है। वास्तव में देकार्ट्स इसकी समुचित व्याख्या नहीं दे पाते।